

Vol-IX No.-4-2018

ISSN 2231 1483

Wisdom Herald

International Multidisciplinary Peer Reviewed Quarterly Research Journal

U.G.C.- S.N0. 242

U.G.C. Journal No. 40878

Vol-X

No.-1

Jan-March, 2019

Editor in Chief

Prof. Shyam Nath Mishra

Executive-Editor

Dr. Anjani Kumar Mishra

Editor

Dr. Aparna

Published by

Society for Indo-Tibetan Buddhist Studies Delhi

Approved by U.G.C., New Delhi

CONTENT

वाजपेयी का प्रारम्भिक जीवन तथा परिचय रोहित कुमार	1-6
सूरदास के काव्य में तत्कालीन राजनीतिक परिस्थितियाँ: एक विश्लेषण डॉ० सरिता मिश्रा	7-10
Impact of the decisions of the indian supreme court on the decisions of sri lankan supreme court Ankit Raghuvanshi	11-20
डॉ.अम्बेडकर के मानवाधिकार संबंधी विचार कमल किशोर मंडल	21-26
ब्रिटिश काल में बैंकिंग प्रणाली डॉ० मुद्रिका प्रसाद सिंह, अजय कुमार	27-34
मोहनदास कहानी में दलित पारिवारिक विघटन सुधीर साहू	35-40
लोकचिंतन के सच्चे हस्ताक्षर : शिवप्रसाद सिंह डॉ. राजेन्द्र यादव	41-48
भारत में बेरोजगारी का कारण तथा स्वरूप डॉ० अवध बिहारी सिंह, पुष्पा गुप्ता	49-54
सती प्रथा उन्मूलन में राम मोहन राय की भूमिका डॉ० शिशुपाल सिंह	55-60
भारत में गरीबी एक जटिल समस्या : एक अध्ययन डॉ० शम्भू प्रसाद यादव	61-66
An overview of GI protection in India Sunil Kumar	67-72
Role Of Horticulture Marketing In The Rural Development Of Bihar Dr. Raj kumar Gupta, Asha Gupta	73-78

लोकचिंतन के सच्चे हस्ताक्षर :

शिवप्रसाद सिंह

डॉ. राजेन्द्र यादव*

व्यक्तित्व ही किसी व्यक्ति को सम्पूर्ण मानव बनाता है। बाह्य रूप या आन्तरिक रूप के समन्वय से ही एक सम्पूर्ण व्यक्तित्व का निर्माण होता है। डॉ. शिवप्रसाद सिंह अत्यंत प्रभावी व्यक्तित्व के धनी थे। उनका बाह्य तथा आन्तरिक व्यक्तित्व प्रभावशाली था। प्रथम दर्शन में ही उनके धीर-गंभीर, पांडित्य पूर्ण व्यक्तित्व का प्रभाव अमिट रूप से छोड़ जाता था। उनके साहित्यिक मित्र, समीक्षक या शिष्य इस प्रभावी व्यक्तित्व से प्रभावित हुए बिना नहीं रहे। शिवप्रसाद सिंह की अध्यात्म, इतिहास, ज्योतिष, भाषा-विज्ञान, संस्कृति, दर्शन, साहित्यशास्त्र, समाजशास्त्र आदि पर अच्छी पकड़ थी। वे साहित्य सृजन से लेकर आलोचना तक हिन्दी साहित्य में लगभग पाँच दशकों तक क्रियाशील रहे। वे एक अच्छे कहानीकार, उपन्यासकार तथा सफल शोधकर्ता और आलोचक के रूप में प्रसिद्ध हुए। एक लेखक के निर्माण में सार्वजनिक जीवन की संरचनाएँ नाना पुराण ग्रन्थ, अध्ययन और अनुभव प्रतिभा और श्रम आदि का योगदान रहता है। शिवप्रसाद सिंह के संदर्भ में यह बात सौ प्रतिशत सही है। हिमांशु जोशी कहते हैं, “साहित्य, संस्कृति दर्शन हर विषय में उनकी गहरी पैठ थी।”

इनका जन्म एक मध्यमवर्गीय कृषक परिवार में हुआ था। अतः उनका पारिवारिक परिवेश न तो बहुत साहित्यिक एवं आध्यात्मिक ही था और न ही उन्हें बहुत कलात्मक संस्कार विरासत के रूप में मिले। परन्तु पिता श्री चन्द्रिका प्रसाद सिंह और माता जी श्रीमती कुमारी देवी के संस्कार शील संयुक्त हिन्दू परिवार की सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति अवश्य ऐसी थी कि शिवप्रसाद सिंह को अपने आरंभिक जीवन में बहुत संघर्ष नहीं करना पड़ा, परन्तु फिर भी शिक्षा में निरन्तर आर्थिक बाधाएँ आती रहीं।

देखा जाय तो स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी कथा साहित्य कई धरातलों पर अपने पूर्ववर्ती कथा साहित्य से भिन्न है। सन् 1950 ई. से पहले के कथा साहित्य में जहाँ स्वतंत्रता प्राप्ति का उत्साह था, नारे थे, जुलूस थे, परतंत्रता की बेड़ियों को काटने की छटपटाहट थी। वहीं स्वतंत्रता के पश्चात् के कथा साहित्य में विभाजन,

*वरिष्ठ सहायक प्राध्यापक, हिन्दी विभाग डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर (म.प्र.)